IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

स्वामी आत्मानन्द: छत्तीसगढ़ के सामाजिक जागरण के अग्रदूत

टिकेश्वर कुमार (शोधार्थी)
इतिहास विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
डॉ. सुशांत कुमार पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक - इतिहास
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश :–
छत्तीसगढ़ की महान विभूति, समाज सुधारक और शिक्षाविद स्वामी आत्मानंद छत्तीसगढ़ के आधुनिक इतिहास के एक ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने अध्यात्म को समाज सेवा के व्यावहारिक धरातल पर उतारा। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि व्यक्तिगत सफलता और उच्च पदों की तुलना में मानवता की निस्वार्थ सेवा अधिक गौरवशाली है। स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा, आध्यात्मिक जागृति और विशेष रूप से अबूझमाड़ जैसे दूरस्थ क्षेत्रों में आदिवासियों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था। प्रस्तुत में उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन आश्रमों और उनके द्वारा रचित आध्यात्मिक पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ सरकार उनके सम्मान में स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय योजना चला रही है, जो आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रदान करती है। ये स्रोत दर्शाते हैं कि किस प्रकार स्वामी जी के आदर्श आज भी राज्य की शैक्षणिक और सामाजिक प्रगति के लिए एक मार्गदर्शक स्तंभ बने हुए हैं। यह पूरा संकलन एक मेधावी छात्र के संन्यासी बनने और फिर एक महान राष्ट्र निर्माता के रूप में उभरने की प्रेरणादायक गाथा है।

शब्द कुंजी:– सामाजिक जागरण, सामाजिक उत्थान, स्वामी आत्मानन्द, छत्तीसगढ़, आध्यात्मिक यात्रा, रामकृष्ण मिशन,

प्रस्तावना :–

स्वामी आत्मानंद (1929–1989) छत्तीसगढ़ के प्रखर संत, समाज सुधारक, शिक्षाविद् एवं रामकृष्ण मिशन के कर्मयोगी थे, जिन्हें आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है। प्रखर बुद्धि, ओजस्वी वक्ता, हर्षित स्वभाव तथा अटूट आशावादी–उनकी पहचान थी। स्वामी आत्मानंद भारत के छत्तीसगढ़ के एक प्रमुख सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक दार्शनिक थे। उनका जन्म 6 अक्टूबर 1929 में छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के एक छोटे से गाँव बरबंदा गांव में हुआ था । उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्ष हिंदू धर्मग्रंथों और दर्शन का अध्ययन करते हुए बिताए।[1]

स्वामी आत्मानंद, जिन्हें बचपन में 'तुलेन्द्र' के नाम से जाना जाता था, स्वामी आत्मानंद ने अपनी उच्च शैक्षणिक योग्यता और प्रशासनिक भविष्य (आईएएस) का परित्याग कर अपना जीवन मानवता की सेवा और शिक्षा के प्रसार में समर्पित कर दिया। आज छत्तीसगढ़ में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में जो बुनियादी ढांचा विकसित हो रहा है, वह स्वामी आत्मानंद के "शिव भाव से जीव सेवा" के संकल्प का ही प्रतिफल है। स्वामी आत्मानंद की आध्यात्मिक यात्रा रामकृष्ण मिशन के सिद्धांतों पर आधारित थी ,1947 में उन्होंने रामकृष्ण मठ के तत्कालीन अध्यक्ष स्वामी विरजानंद जी से मंत्र दीक्षा प्राप्त की। 1957 में स्वामी शंकरानंद जी ने उन्हें ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी और उन्हें 'ब्रह्मचारी तेज चौतन्य' नाम दिया गया। 1960 में बुद्ध पूर्णिमा के दिन अमरकंटक में उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और 'स्वामी आत्मानंद' कहलाए। उन्होंने हिमालय (स्वर्गाश्रम) में कठिन साधना की। उनके गुरु स्वामी पुरुषोत्तमानंद ने उन्हें भय पर विजय पाने की शिक्षा दी, जिसे उन्होंने 'अभय की सिद्धि' के रूप में आत्मसात किया।[2]

स्वामी आत्मानंद ने छत्तीसगढ़ और उसके बाहर कुल 17 आश्रमों का निर्माण और निर्देशन किया। उनका मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है था। विवेकानंद आश्रम, रायपुर स्थापना 1958/1962 यह छत्तीसगढ़ में रामकृष्ण भावधारा का मुख्य केंद्र बना। यहाँ एक पुस्तकालय, धर्मार्थ चिकित्सालय और छात्रों के लिए 'विवेकानंद विद्यार्थी भवन' स्थापित किया गया। अबूझमाड़ ग्रामीण विकास प्रकल्प, नारायणपुर (1985) यह स्वामी जी की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। बस्तर के अबूझमाड़ क्षेत्र के आदिवासियों के उत्थान के लिए उन्होंने यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के व्यापक कार्य शुरू किए। रामकृष्ण सेवा समिति, बिलासपुर यहाँ पुस्तकालय, आवासीय छात्रावास और आध्यात्मिक केंद्रों की स्थापना की गई। रामकृष्ण सेवा मंडल, भिलाई यहाँ होम्योपैथिक चिकित्सालय और पुस्तकालय के माध्यम से सेवा कार्य किए गए।[3]

बस्तर संभाग में नारायणपुर आश्रम के विशेष सेवा कार्य 1198 छात्रों वाला आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,आईटीआई के माध्यम से 10 ट्रेडों में प्रशिक्षण, 30 बिस्तरों वाला 'विवेकानंद आरोग्य धाम' अस्पताल और मोबाइल मेडिकल यूनिट, 3868 किसानों को प्रशिक्षित करने वाला कृषि प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण फार्म। 210 हैंडपंपों की स्थापना और उचित मूल्य की दुकानों का संचालन एक महत्वपूर्ण संस्थागत योगदान और सेवा प्रकल्प में से एक हैं।[4]

स्वामी आत्मानंद का दर्शन स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक वेदांत का विस्तार था वह मानते थे कि शिक्षा केवल जानकारी का नाम नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण, आचरण में सुधार और मनोबल का विकास है। उन्होंने 'दरिद्र नारायण' (गरीबों में ईश्वर) की पूजा को सबसे बड़ी पूजा बताया। उनके अनुसार संसार के सभी धर्म मूल मानव धर्म की ही अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने कुशलता के साथ कार्य करने की विधि को ही कर्म योग माना। उनके अनुसार मोक्ष का अर्थ अज्ञान का दूर होना है। मृत्यु को वह आत्मा द्वारा शरीर का त्याग और एक गहरी नींद के समान मानते थे जिससे मनुष्य ताजगी प्राप्त करता है।

स्वामी आत्मानंद एक प्रखर चिंतक और लेखक भी थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ और संपादन कार्य उनके द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें जिसमें 'तत्व चिंतन' इस पुस्तक में स्वामी जी ने अपने दार्शनिक विचारों और जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया है (उदाहरण के लिए– उन्होंने आईएएस की परीक्षा पास करने के बावजूद वह नौकरी क्यों नहीं की, इसका विस्तार से वर्णन इसी पुस्तक में मिलता है)। 'धर्म और जीवन' यह पुस्तक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की चाह रखने वाले लोगों के लिए एक बहुत ही व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। 'आत्मोन्नति के सोपान' यह पुस्तक भी आत्म–विकास और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने वाली एक महत्वपूर्ण रचना है।

'धर्म जिज्ञासा' यह धर्म और अध्यात्म से जुड़े विभिन्न विषयों और शंकाओं पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी पुस्तक है। 'श्रीरामकृष्ण की कहानियाँ' इसमें स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन और दृष्टांतों से जुड़ी प्रेरक कहानियों का संकलन किया गया है। 'गीता तत्व चिंतन' श्रीमद्भगवद्गीता पर उनके प्रवचनों का संग्रह साहित्यिक योगदान के कारण उन्हें छत्तीसगढ़ में सामाजिक जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं ।[5]

विवेक ज्योति (पत्रिका) 1963 में उन्होंने इस हिंदी त्रैमासिक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन शुरू किया, जो धर्म, दर्शन और समाज पर आधारित है। स्वामी आत्मानन्द ने रामकृष्ण मिशन से अलगाव (1959) के बाद कोई व्यक्तिगत पुस्तक या ग्रंथ प्रकाशित नहीं किया, बल्कि सेवा कार्यों के प्रचार हेतु विवेकज्योति पत्रिका का नियमित प्रकाशन आरंभ किया। यह मासिक पत्रिका आदिवासी उत्थान, वेदांत दर्शन तथा छत्तीसगढ़ के सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित रही, जो रामकृष्ण सेवा समिति के बैनर तले छत्तीसगढ़ी एवं हिंदी में जारी हुई। स्वामी आत्मानन्द के प्रकाशनों का मुख्य विषय आदिवासी उत्थान, वेदांत आधारित कर्मयोग तथा छत्तीसगढ़ के सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दे रहे। विवेकज्योति पत्रिका–उनका प्रमुख मासिक प्रकाशन–अबूझमाड़ परियोजना के कार्यों, सूखा राहत प्रयासों (1974), महिला–बाल कल्याण तथा आदिवासी शिक्षा पर केंद्रित थी, जो छत्तीसगढ़ी–हिंदी में जागृति फैलाती रही।[6]

इस प्रकार स्वामी आत्मानंद जी एक महान विचारक, दार्शनिक और लेखक भी थे। तुलेन्द्र ने ी परीक्षा में टॉप 10 में आने के बावजूद स्वामी विवेकानंद के आदर्शों और जनसेवा के लिए साक्षात्कार छोड़ दिया और रामकृष्ण आश्रम की विचारधारा अपनाकर साधना का मार्ग चुना। गांधीजी की सादगी और सेवा भाव ने बाल तुलेन्द्र के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित किया, जो बाद में रामकृष्ण मिशन के कर्मयोग से जुड़कर छत्तीसगढ़ में आदिवासी उत्थान कार्यों में परिलक्षित हुआ। उनके पिता स्वतंत्रता सेनानी थे और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल गए, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से गांधीवादी विचारधारा परिवार तक पहुँची।[7]

स्वामी आत्मानन्द ने 1957 में संन्यास लेकर रामकृष्ण मिशन से जुड़े तथा रायपुर आश्रम (1960) और नारायणपुर अबूझमाड़ परियोजना स्थापित की, जो विवेकानन्द की शिक्षाओं पर आधारित थीं न कि गांधीवादी आंदोलन पर। इंदिरा गांधी से उनकी बाद की भेंट (1970 के दशक) अबूझमाड़ विकास के लिए प्रेरित हुई, लेकिन गांधीजी से सहयोग का उल्लेख साहित्य में केवल प्रारंभिक प्रेरणा तक सीमित है।

स्वामी जी के प्रयास मुख्यतः स्वतंत्रता के बाद आदिवासी उत्थान, शिक्षा और अबूझमाड़ परियोजना (1985) पर केंद्रित रहे, जो विवेकानन्द की कर्मयोग परंपरा से प्रेरित थे न कि राजनीतिक आंदोलन से। साहित्य में उनके स्वतंत्रता संग्राम सहभागिता का स्पष्ट प्रमाण अनुपस्थित है। रायपुर में रामकृष्ण विवेकानन्द आश्रम की स्थापना (1960–62) इसी संबंध का प्रारंभ था, जिसे 1968 में बेलूर मठ से पूर्ण संबद्धता मिली। स्वामी जी ने विवेकानन्द के 1877–79 रायपुर प्रवास को आधार बनाकर आश्रम बसाया तथा आदिवासी सेवा को मिशन के वेदांत–कर्मयोग से जोड़ा। यह संबंध सेवा प्रधान था, जिसमें नारायणपुर और अबूझमाड़ परियोजनाएँ मिशन की शाखा के रूप में कार्यरत रहीं।[8]

छत्तीसगढ़ में लोकप्रिय :–

स्वामी जी छत्तीसगढ़ के लोगों के प्रति इतने निस्वार्थ भाव से समर्पित थे कि उनके पास मंदिर निर्माण के लिए जो भी पैसा था, उसे उन्होंने जरूरतमंद लोगों में बांट दिया। उन्होंने छत्तीसगढ़ आए बांग्लादेश के शरणार्थियों को भोजन आश्रय और शिक्षा प्रदान करने के लिए बहुत मेहनत की। सरकार के विशेष अनुरोध पर उन्होंने नारायणपुर में आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा के स्कूल का उद्घाटन किया। वह युवा सशक्तिकरण और नैतिक शिक्षा की दिशा में अपने गतिशील कार्य के लिए छत्तीसगढ़ में लोकप्रिय थे।

स्वामी आत्मानंद छत्तीसगढ़ में अत्यधिक लोकप्रिय हैं, जिन्हें आधुनिक शिक्षा का जनक, आदिवासी उत्थान के प्रणेता तथा विवेकानंद परंपरा के कर्मयोगी के रूप में पूजा जाता है। उनके नाम पर राज्य सरकार ने 300+ उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल स्थापित किए, जो नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में साक्षरता क्रांति ला रहे हैं। रायपुर विवेकानंद आश्रम (1962), नारायणपुर वनवासी केंद्र तथा

अबूझमाड़ परियोजना (1985) ने दुर्गम आदिवासी बस्तर–नारायणपुर में शिक्षा–स्वास्थ्य मॉडल स्थापित किया। 1974 सूखा राहत में 36 गाँवों का उत्थान उनकी निस्वार्थ सेवा का प्रतीक बना।

छत्तीसगढ़ सरकार (भूपेश/विष्णु देव साय प्रशासन) ने स्वामी आत्मानन्द उत्कृष्ट स्कूल योजना शुरू की, जो 5वीं से 12वीं तक मुफ्त अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करती है– 279+ स्कूल, 3 लाख+ छात्र। जन्म जयंती (6 अक्टूबर) राज्यव्यापी उत्सव है। उनकी "दारिद्र नारायण सेवा" विचारधारा आज नक्सल–विरोधी रणनीति का आधार है, जहाँ शिक्षा आत्मनिर्भरता लाती है। प्रतिष्ठान रायपुर में उनके दर्शन को जीवंत रखता है।[9]

रायपुर विवेकानंद आश्रम और नारायणपुर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना बताते हैं कि स्वामी आत्मानंद छत्तीसगढ़ की सेवा में इस कदर ब्रम्हानंद में लीन हुए कि मंदिर निर्माण के लिए प्राप्त राशि अकाल ग्रस्त ग्रामीणों को बांट दी. बांग्लादेश से आए शरणार्थियों की सेवा, शिक्षा के लिए सतत प्रयास, कुष्ठ उन्मूलन आदि समाजहित के कार्य जी–जान से जुटकर करते रहे. उन्होंने स्वामी विवेकानंद के रायपुर प्रवास को अविस्मरणीय बनाने के उद्देश्य से रायपुर में विवेकानंद आश्रम बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया. इस कार्य के लिए उन्होंने मिशन से विधिवत स्वीकृति नहीं मिली, किन्तु वे इस प्रयास में सफल रहे और आश्रम निर्माण के साथ ही रामकृष्ण मिशन बेलूर मठ से संबद्धता भी प्राप्त हो गई. इसके साथ ही उन्होंने शासन के अनुरोध पर वनवासियों के उत्थान के लिए नारायणपुर में उच्च स्तरीय शिक्षा केन्द्र की स्थापना की स्वामी विवेकानंद जी के विचार और जीवन का स्वामी आत्मानंद पर गहरा प्रभाव था।

आत्मानंद जी को स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रभाव न केवल उनके व्यक्तित्व में ही बल्कि उनके सेवाओं और कार्यक्षेत्र में भी महसूस होता था। उन्होंने समाज के प्रति अपना समर्पण स्पष्ट किया और विवेकानंद जी के आदर्शों के आलोक में उन्होंने अपनी सेवाओं को समाज के लाभ के लिए समर्पित किया।[10]

स्वामी आत्मानंद ने स्वामी विवेकानंद के विचारों को अपने कार्यक्षेत्र में अंगीकार किया और उन्हें अपने जीवन में अमल में लाया। उन्होंने युवाओं को साहस, आत्मविष्वास, और समाजसेवा के माध्यम से अपनी उच्चतम प्रासंगिकता को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्वामी आत्मानंद के योगदान ने छत्तीसगढ़ के सामाजिक, आर्थिक, और आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और उनकी सेवाओं का प्रभाव आज भी महसूस किया जा रहा है। स्वामी आत्मानन्द ने अपने जीवन के दौरान भारतीय संस्कृति, धर्म, और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देने के लिए अपनी जीवनधारा को एक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया। उनका शोध और चिंतन ध्यान, ध्यान की अभ्यास, धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन, और आत्मज्ञान की प्राप्ति पर आधारित था। उन्होंने अपने शिष्यों को मार्गदर्शन और शिक्षा दी जो सच्ची संतता, शांति, और समृद्धि की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

स्वामी आत्मानंद ने समाज में जातिवाद, अंतर–सामाजिक विभाजन, और गरीबी के समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ के लोगों को समृद्धि और सामाजिक न्याय की दिशा में मार्गदर्शन किया। उनके विचारों का मुख्य उद्देश्य समाज को समृद्ध, समान, और संतुलित बनाना था।[11]

निष्कर्ष :–

स्वामी आत्मानंद जी का जीवन और कार्य छत्तीसगढ़ के सामाजिक उत्थान की दिशा में एक अमिट छाप छोड़ते हैं। उनके सिद्धांत और विचार आज भी समाज में जीवंत हैं और विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से लागू किए जा रहे हैं। उन्होंने गरीबी को केवल एक आर्थिक समस्या नहीं माना, बल्कि इसे सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से देखा। यही कारण है कि उनके द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम आज भी समाज के वंचित वर्गों को प्रेरित करते हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे बढ़ाते हैं।

स्वामी आत्मानंद ने महिलाओं के सशक्तिकरण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना। उन्होंने व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, स्वयं सहायता समूहों और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थापना कर समाज के पिछड़े वर्गों को आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन की ओर अग्रसर किया। उनके द्वारा स्थापित आश्रम और सेवा कार्य आज भी सक्रिय हैं और समाज में सुधार की प्रक्रिया को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। उनकी निस्वार्थ सेवा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने उन्हें **"छत्तीसगढ़ का विवेकानंद"** की उपाधि दिलाई। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी समाज के उत्थान का संकल्प लिया और उसे पूरा करने के लिए जीवनभर कार्यरत रहे। उनके विचार और आदर्श आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। इस प्रकार, शोध से स्पष्ट होता है कि स्वामी आत्मानंद जी का योगदान केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज भी समाज सुधार के विभिन्न क्षेत्रों में मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में उनके सिद्धांतों का पालन करते हुए समाज निरंतर आगे बढ़ रहा है। उनकी निस्वार्थ सेवा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. निखिलेश्वरानंद, स्वामी. (2012). एकाग्रता और ध्यान. राजकोटः रामकृष्ण आश्रम. (स्वामी आत्मानंद के सहयोगी और समकालीन संत). पृ. 4–7।
2. रामकृष्ण मिशन आश्रम. (2005). अबूझमाड़ में सेवा के 20 वर्ष (प्रतिवेदन). नारायणपुरः रामकृष्ण मिशन आश्रम पृ. 3–9।
3. शुक्ला, आर. (1972), स्वामी आत्मानंद और छत्तीसगढ़ में सामाजिक जागृति , रायपुरः लोक जागरण प्रकाशन, पृ. 45–62.।
4. त्रिपाठी, एम, (1970), स्वामी आत्मानंद का शैक्षिक दृष्टिकोण, रायपुरः विद्या भारती प्रकाशन, पृ. 23–39।
5. पांडे, वी. (1963)। स्वामी आत्मानंद की आध्यात्मिक यात्रा । रायपुरः आत्मानंद ग्रंथमाला, पृ. 5–22।
6- Dubey H. (1980) Spirituality and Social Service: Swami Atmanand's Vision, Raipur: Seva Prakashan] pp] 12–29.
7- Patel. J. (1978), Swami Atmanand: A Biography. Raipur: Chhattisgarh Granth Academy.pp- 5–20.
8. दुबे, एच, (1980), अध्यात्म और समाज सेवारू स्वामी आत्मानंद का दृष्टिकोण । रायपुररू सेवा प्रकाशन, पृ. 12–29.
9. पटेल, जे, (1978), स्वामी आत्मानंदः एक जीवनी । रायपुररू छत्तीसगढ़ ग्रंथ अकादमी, पृ. 5–20.
10. साहू, एल, (1977), स्वामी आत्मानंद और गरीब : सामाजिक उत्थान का एक अध्ययन । रायपुरः लोक कल्याण प्रकाशन, पृ. 44–63.
11. कुमार, एस, (1973), स्वामी आत्मानंद : सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत । रायपुररू प्रगति प्रकाशन, पीपी. 61–80.